घर के कम उम्र के बच्चों की जाँच और इलाजः–

पांच साल से कम आयु के बच्चों की कीटाणु से लड़ने की क्षमता कम होती है, इसलिए बीमारी होने की ज्यादा संभावना होती है। सही जाँच और कुछ दवाओं के उपयोग से उन्हें रोग से बचाया जा सकता है। बच्चों को टी.बी. रोग सुरक्षा के लिये 3–6 महीने तक एक प्रकार की गोली दी जाती है जो उसके लिए बेहद जरूरी है। इसलिए जिन्हें फेफड़े की टी.बी. है उन्हें परिवार के 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की जांच और इलाज करवाना अत्यन्त आवश्यक है।

कराईये पांच साल से कम आयु के बच्चों की जांच, ताकि नहीं आए उन पर टी.बी. की आंच।।

= = :0: = =

सहयोग राशि
व्यक्तिगत – 2 रू.
संस्थागत – 4 रू.

क्षय रोग (टी.बी.) की सहायक पुस्तिका

जन स्वास्थ्य सहयोग
ग्राम व पोस्ट : गनियारी
जिला – बिलासपुर (छ.ग.)

2012

टी.बी. की जानकारी :–

टी.बी. एक तरह के कीटाणु से होने वाली बीमारी है, जो कमजोर, कुपोषित व्यक्ति को आसानी से होती है। आम तौर पर यह बीमारी दो प्रकार की होती है। फेफड़े की टी.बी. और फेफड़े के बाहर की। फेफड़े की टी. बी. एक मरीज से दूसरे को फैल सकती है। और यही बीमारी घातक है। फेफड़े के बाहर की टी. बी. गले की गठानों में, जोड़ों में, रीढ़ की हड्डी में, आंतों में, मस्तिष्क इत्यादि में हो सकती है। इस प्रकार की टी. बी. से दूसरो को कीटाणु फैलने का खतरा नहीं रहता।

फेफड़े की टी. बी. के मुख्य लक्षण :–

- तीन सप्ताह से अधिक बुखार।
- तीन सप्ताह से अधिक खाँसी और बलगम
- खाँसी में खून आना।
- भूख कम लगना और वजन का घट जाना।
- कभी–कभी छाती में दर्द या सांस फूलता है।

अगर घर या गाँव में ऐसे लक्षण का व्यक्ति हो तो पास के स्वास्थ्य केन्द्र अथवा हमारे केन्द्र में आकर जाँच करवाएँ। इसमें देर ना करें। हो सकता है आपके प्रियजन को टी.बी. हो।

जाँच और इलाज में देर के कारण :–

- बीमारी को हल्की खाँसी, बुखार और कमजोरी समझ रहे थे।
- पता नहीं था कि असली बीमारी टी.बी. है।

अधूरा इलाज करवा चुके मरीजों से बात :–

- हमें मालूम नहीं था टी.बी. है, डॉक्टर ने नहीं बताया।
- दवा बहुत महंगा था कहां से करते।
- पेशाब लाल हुआ डर गये।
- गर्मी कर गये, खाँसी में खून आया।
- 2 हफ्ते में बीमारी ठीक नहीं हुई तो बंद कर दिये।
- अस्पताल गाँव से दूर था।
- 2 महीने बाद ठीक लगा तो बंद कर दिये।
- कमाने खाने चले गये।

अधूरे इलाज के तीन बड़े नुकसान :–

- बीमारी फिर से पनप सकती है। मरीज की मृत्यु हो सकती है।
- अधूरे इलाज से रोग के कीटाणुओं को दवा का अनुभव हो जाता है और इन दवाओं का असर कम हो जाता है। दोबार इसका इलाज बहुत लंबा, खर्चीला और मुश्किल होता है। ऐसी टी.बी. का इलाज फेल भी हो सकता है।
- अधूरे इलाज से कीटाणु खाँसी द्वारा परिवार के अन्य सदस्यों और दूसरे लोगों को फैल सकते हैं। इससे परिवार व गांव के लोगों की परेशानी बहुत बढ़ सकती है।

क्यों लें दोबारा टी.बी. का खतरा? दोबारा हुई टी.बी. का इलाज अधिक लंबा, अधिक महंगा होता है और कभी–कभी फेल भी हो सकता है।

दवा के साथ परहेज :–

- टी.बी. का इलाज घर पर हो सकता है। अगर मरीज नियम से दवा ले और खांसी के समय मुंह पर कपड़ा रखें और खुले में न थूकें तो परिवार वालों को खतरा नहीं रहता। खखार या बलगम को धूल या राख से ढकना चाहिए।

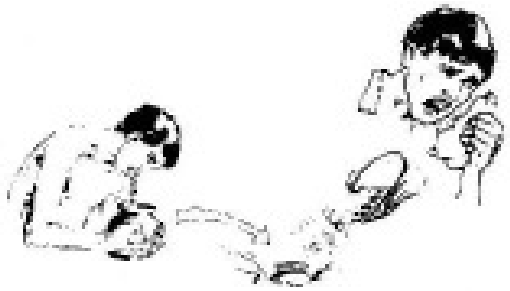

- टी.बी. के मरीज रोजमर्रा की सब चीजें खा सकते हैं। चावल में तेल डालकर खाना, दाल, सोयाबीन की बड़ी, मूंगफली और संभव हो तो मांस मछली और अंडे खा सकते हैं।
- टी.बी. की दवा के साथ टॉनिक, ग्लूकोज बॉटल, खांसी सिरप लेने से कोई फायदा नहीं है।
- बीड़ी, गांजा, तंबाकू, गुड़ाखू फेफड़े को खराब करते हैं इसलिए इन आदतों को छोड़ देना चाहिए।

नशा इंसान की दशा एवं दिशा बदल देती है।

- गाँव के डॉक्टर से सूजी–पानी करवा रहे थे।
- टॉनिक और खाँसी सिरप पी रहे थे।
- कुछ दिन आराम लगा और फिर जस के तस।
- खाँसी के साथ खून आने लगा और कमजोरी बढ़ गई। तब जांच कराने आए हैं।
- घर के लोग जादू–टोना बता रहे थे इसलिये बैगाई करा रहे थे।
- बीमारी के जांच और इलाज के लिये पैसे नहीं थे।

सरकार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में टी.बी. के मरीजों को दवा का पूरा कोर्स निःशुल्क देती है। इसका लाभ मरीजों को लेना चाहिए।

इलाज के दौरान ध्यान देने वाली बातें–

आपकों टी.बी. की बीमारी सही और विश्वसनीय जांच के बाद बताई गई है– हताश न हों। टी.बी. का पक्का इलाज है। जिससे बीमारी जड़ से मिट जाती है। पर इसके लिये सही दवा सही मात्रा में पूरे 6–9 महिने नियमित रूप से लेनी पड़ेगी।

- टी.बी. के लक्षण धीरे–धीरे बढ़ते हैं और दवा लेने पर कुछ समय बाद ही घटते हैं। टी.बी. के दवाई का असर निश्चित तौर पर होता है।

- अगर दवा नियमित रूप से नहीं लेंगे तो यह बीमारी गंभीर बनकर आपको बहुत कमजोर बना देगी। मृत्यु भी हो सकती है। बीच–बीच में दवा नहीं लेने से दवाओं का असर कम हो जाता है जिससे आगे इलाज में मुश्किलें आती हैं।

- बीमारी के लक्षण ठीक होने और बीमारी जड़ से खत्म होने में अंतर है। 2–3 महीने दवा खाने से आपको अच्छा लग सकता है, पर बीमारी खत्म नहीं होती है।

- लक्षण ठीक होने पर दवा बंद करने की भूल ना करें। 2–3 महीने में दवा बंद कर देंगे तो इलाज अधुरा रहेगा। जिससे आपको और आपके परिवार को कई परेशानियां हो सकती है। दवा डॉक्टर के सलाह पर ही बंद करें।

सही दवा को पूरे समय धीरज और विश्वास के साथ इस्तेमाल करें, आजीवन बीमारी से छुटकारा पायें। टी.बी. को अपने शरीर, जीवन और घर परिवार से दूर भगायें।

दवा के बारे में :–

- टी.बी. के दवा हर रोज लेना है। आपको दवा एक पैकेट के रूप में दिया गया है। लाल केप्सूल को खाली पेट में खाना है बाकी दवाओं को 2–3 घंटे बाद खाने के साथ ले सकते हैं। दवा 5–5 मिनट के अंतर से भी ले सकते हैं।

- दवा जितनी मात्रा में दी गई है उतनी मात्रा में ही लेना है। कम या अधिक नहीं लेना है। ऐसा करने से बीमारी नहीं हटेगी।

शुरू में अधिक दवा दी जाती है पर रोगी की स्थिति बेहतर होने पर दवाईयों की संख्या कम की जाती है।

- यदि किसी मरीज को सूजी (Injection) लगता हो तो उसे चिकित्सक की सलाह से समय पर लगाना चाहिए।

- टी.बी. की दवा से लाल रंग का पेशाब होता है इससे घबराना नहीं है।

- कुछ लोगों को दवाई से अल्लरपन लगता है। पर बीमारी ठीक होने पर लक्षण ठीक हो जाता है।

- दवा से भूख न लगना, खुजली होना, खखार में लाल रंग आना, बुखार ठीक न होना, शुरू 1 माह खाँसी 1 माह तक ठीक न होना। पेशाब में जलन, पेट दर्द हो सकता है।

हमें अपनी परेशानी बतायें :–

- अगर आपको दवा से कोई परेशानी होती है तो हमें बतायें। हम इसका हल बतायेंगे। दवा गर्म पड़ी कहकर अपने मन से दवा बंद न करें, बीमारी बढ़ सकती है।

- दवायें आपको कम कीमत पर उपलब्ध है। अगर आप दवा की कीमत नहीं दें पाते हैं तब भी दवा चालू रहे इसकी व्यवस्था हम कर सकते हैं।

- अगर अन्य कहीं बाहर कमाने–खाने जा रहें है तो आपकी दवा अधूरी रह सकती है। इसकी सूचना दें। हम आपकी दवा की उचित व्यवस्था और सलाह देंगे ताकि आपकी दवा बंद न हों।